

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ मई २०१८
वर्ष : २७ अंक : ११
(निरंतर अंक : ३०५)
पृष्ठ संख्या : ३६
(आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य बापूजी के सद्भावना- वचन

पृष्ठ ४

ऐसा नहीं है कि जो हो गया वह सब आखिरी है। हमको तो भरोसा है कि साँच को आँच नहीं, झूठ को पैर नहीं। सुखद परिस्थिति आ जाय चाहे दुःखद आ जाय... आयी है वह जायेगी। तुम नित्य रहनेवाले हो और शरीर व परिस्थितियाँ अनित्य हैं। अपने-आपको याद करो, 'मैं अमर हूँ, चैतन्य हूँ...' और धैर्यवान भी बनो तथा उपद्रवियों एवं भड़कानेवालों से बचो। सबका मंगल, सबका भला।

- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

भक्तों की आरथा है कि डिगती नहीं ! पृष्ठ १३



उन लोगों ने चारित्रिक दोष की कल्पना की है लेकिन आशारामजी बापू महात्मा हैं।

- महंत नृत्यगोपालदासजी, अध्यक्ष, श्रीराम जन्मभूमि न्यास



आजादी के बाद सबसे ज्यादा अगर किसीको सताया गया होगा तो आशारामजी बापू को सताया गया है। - सुरेश चव्हाणके, चेयरमैन, सुदर्शन न्यूज



पूज्य बापूजी को उच्च न्यायालय से न्याय मिलेगा ऐसा हमारा विश्वास है।

- चेतन राजहंस, राष्ट्रीय प्रवक्ता, सनातन संस्था



इससे नकली केस मैंने अपनी जिंदगी में नहीं देखा है।

- इशकरण सिंह भंडारी

अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय



अन्याय की सारी पराकाष्ठाओं को पार कर दिया गया है। - महंत यति नरसिम्हानंदजी



गत ४०-५० सालों में यदि हिन्दू धर्मावलम्बियों पर सबसे ज्यादा किसीका प्रभाव पड़ा तो आशाराम बापूजी का पड़ा है और इसकी वजह से ही उनके खिलाफ षड्यंत्र किया गया।

- डी. जी. वंजारा, पूर्व प्रमुख, ATS, गुज.



आर्थिक कष्ट
निवारण हेतु

२६



कैसे बना में
इंडिया टॉपर ?

२५

संस्कृतिप्रेमी व साधक क्या करें ? १४

समाजोत्थान में संतों की महती भूमिका



सच्चे संत जाति, धर्म, मत, पंथ, सम्प्रदाय आदि दायरों से परे होते हैं। ऐसे करुणावान संत ही अज्ञान-निद्रा में सोये हुए समाज के बीच आकर लोगों में भगवद्भक्ति, भगवद्ज्ञान, निष्काम कर्म की प्रेरणा जगा के समाज को सही मार्ग दिखाते हैं, जिस पर चल के हर वर्ग के लोग आध्यात्मिकता की ऊँचाइयों को छूने के साथ-साथ अपना सर्वांगीण विकास सहज में ही कर लेते हैं। सभीमें भगवद्-दर्शन करने की प्रेरणा देनेवाले ऐसे संतों के द्वारा ही धार्मिक असहिष्णुता, छुआछूत, जातिगत भेदभाव, राग-द्वेष आदि अनेक दोष दूर होकर समाज का व्यापक हित होता है।

ऐसे संतों का जहाँ भी अवतरण हुआ है वहाँ भारतीय संस्कृति के वैदिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार होकर समाज में व्यापक परिवर्तन हुए हैं।

जब समाज में कई विकृतियाँ फैलने लगीं तब आद्य गुरु शंकराचार्यजी ने अपने शिष्यों के साथ भारत के कोने-कोने में घूम-घूमकर सनातन धर्म व अद्वैत ज्ञान का प्रचार किया।

यवनों के आक्रमण से जब सम्पूर्ण हिन्दू समाज त्रस्त था तब योगी गोरखनाथजी व नाथ-परम्परा के योगियों ने समाज में धर्मनिष्ठा व अध्यात्म का प्रचार-प्रसार किया।

राजस्थान में राजर्षि संत पीपाजी ने काशी के स्वामी रामानंदजी से दीक्षा ले के प्रजा को धर्म-मार्ग पर लगाया तो भक्तिमती मीराबाई ने गुरु रैदासजी का शिष्यत्व स्वीकार कर सारे राजस्थान और गुजरात में भगवद्भक्ति की गंगा बहायी।

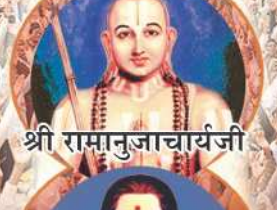
तमिलनाडु के आलवारों (वैष्णव भक्त), नायनारों (शैव भक्त) तथा संत तिरुवल्लुवर जैसे संतों से बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हुए। ११वीं-१२वीं शताब्दी में श्री रामानुजाचार्यजी ने 'वेदांत भावित भक्ति' का भारतभर में प्रचार किया। आंध्र प्रदेश के संत वेमना के उपदेशों का समाज पर बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा।

गुजरात के संत नरसिंह मेहताजी, संत प्रीतमदासजी आदि ने भी प्रभुभक्ति का प्रचार किया और समाज को सही दिशा दी।

संत तुलसीदासजी ने श्री रामचरितमानस तथा अन्य कई ग्रंथों की प्रचलित भाषा में रचना करके सामान्य जनों को आदर्श जीवन जीने की रीति बतायी और उनके जीवन को भक्ति-रस से सराबोर कर दिया।

महाराष्ट्र के संतजन - ज्ञानेश्वरजी, नामदेवजी, एकनाथजी, तुकारामजी, चोखामेला, राँका, बाँका, जनाबाई, नरहरिजी आदि ने और वारकरी सम्प्रदाय के अन्य संतों ने जब घूम-घूम के भगवन्नाम-संकीर्तन के माध्यम से समाज को जगाना शुरू किया तो लाखों लोग उनके अनुयायी बन भगवद्भक्ति के रास्ते चल पड़े।

(शेष पृष्ठ ७ पर)



ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २७ अंक : ११ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३०५
प्रकाशन दिनांक : १ मई २०१८
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
ज्येष्ठ-अधिक ज्येष्ठ वि.सं. २०७५

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम,
मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैनुफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों,
पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व
न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष,
मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैनुफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactures) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम,
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पृष्ठछाह हेतु : (०७९) ३९८७७७४२
Email : ashramindia@ashram.org
Website : www.ashram.org,
www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US \$ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US \$ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US \$ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

- ❖ समाजोत्थान में संतों की महती भूमिका २
- ❖ पूज्य बापूजी के सद्भावना-वचन ४
- ❖ विवेक दर्पण ❖ भगवान या गुरु अंतर्दामी हैं तो ऐसा क्यों ? ९
- ❖ आप कहते हैं... ❖ बलात्कार हुआ ही नहीं है ! - यति नरसिम्हानंदजी १०
- ❖ सत्य के पथ पर... ❖ भक्तों की आस्था है कि डिगती नहीं ! १३
- ❖ संस्कृतिप्रेमी व साधक क्या करें ? १४
- ❖ सेवा सुवास ❖ आँधी-तूफान सह के भी वे पुण्यात्मा सेवा करते हैं १५
- ❖ प्रेरक प्रसंग ❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग १६
- ❖ विद्यार्थी संस्कार ❖ अभावग्रस्त बालक कैसे बना विद्या का सागर ? १८
- ❖ तेजस्वी युवा ❖ कैसे अचल हुआ अंगद का पैर ? २०
- ❖ महिला उत्थान ❖ एक माँ की आध्यात्मिक यात्रा २१
- ❖ विचार मंथन ❖ किनके लिए महात्मा सुलभ और किनके लिए दुर्लभ ? २३
- ❖ लोग निंदा करें तो भले करें, तुम सेवा करते रहो - साँई श्री लीलाशाहजी महाराज २४
- ❖ भक्तों के अनुभव ❖ कैसे बना मैं इंडिया टॉपर ? - नमन जसवानी २५ व ३२
- ❖ दीक्षा से मिली नयी जीवन-दिशा - ओमप्रकाश खंडेलवाल
- ❖ रोगों, कष्टों और विकारों का शमन - भोगीराम सेन
- ❖ गुरुकृपा से हजारों गाँववालों को मिली सूखे से राहत ! - दिलीप मुधाले
- ❖ सुखमय जीवन की अनमोल कुंजियाँ २६ व ३४
- ❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी २७
- ❖ संतों के सिवाय कहीं भी सुख नहीं ❖ संत टेऊरामजी की वाणी
- ❖ गुरुआज्ञा-पालन ही सर्वश्रेष्ठ साधन है ❖ गुरुकृपा की आशा
- ❖ सांस्कृतिक गौरव ❖ हृदय को कुंठित न करें, प्रेम व मधुरता से भरें २८
- ❖ जीवन-निर्माण ❖ विद्यार्थी बनें पुण्यवान व महान २९
- ❖ शरीर स्वास्थ्य ❖ गर्मियों में स्वास्थ्य-सुरक्षा ३०
- ❖ धातुओं के चमत्कारी स्वास्थ्य-लाभ ❖ आरोग्य के तीन स्तम्भ
- ❖ अद्भुत लाभदायी यौगिक क्रिया : मूल-शोधन
- ❖ संस्था समाचार ❖ एक जनहितकारी विलक्षण परम्परा... ३३
- ❖ ग्रीष्मकालीन विद्यार्थी शिविरों का शुभारम्भ

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

 रोज सुबह ७-०० बजे	 रोज सुबह ७-३० बजे	 www.ashram.org/live	 रोज सुबह ७ व रात्रि ९ बजे
--	---	--	--

- ❖ 'साधना प्लस न्यूज' चैनल टाटा स्काई (चैनल नं. ५४०), डिश टीवी (चैनल नं. ६७९), रिलायंस डिजिटल टीवी (चैनल नं. ४३१), रॉची में जीटीपीएल (चैनल नं. ९८९), बिहार में मौर्या सिटी (चैनल नं. ३११) तथा 'JioTV' एन्ड्रोइड एप पर उपलब्ध है।
- ❖ 'न्यूज वर्ल्ड' चैनल मध्य प्रदेश में 'हाथवे' केबल (चैनल नं. २२६) व 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. ३००) पर उपलब्ध है। ❖ 'प्रार्थना' चैनल जम्मू में TechOne Cable पर उपलब्ध है।

गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : Rishi Prasad Official & Rishi Darshan Apps

चारित्रिक दोष की कल्पना की है लेकिन बापू महात्मा हैं



— श्री महंत नृत्यगोपालदासजी
अध्यक्ष, श्रीराम जन्मभूमि न्यास

साधु-महात्माओं को फँसाने के लिए, उनकी निंदा करने के लिए ऐसे झूठे आरोप लगाये जाते हैं। संत आशारामजी बापू के प्रति जनता में बहुत भारी श्रद्धा है अतः दोष लगाने के लिए ऐसे लोगों को कोई-न-कोई सहारा चाहिए। इसलिए इस प्रकार से सहारा लेकर उन्होंने चारित्रिक दोष की कल्पना की है लेकिन आशारामजी बापू महात्मा हैं। जेल होना - न होना यह सब तो होता रहता है। यह तो पहले से ही चला आ रहा है, अनेक महात्माओं को जेल जाना पड़ा है। स्वतंत्रता-आंदोलन में कितने महात्मा जेल गये ! जेल भगवान श्रीकृष्ण का जन्मस्थान है। आशाराम बापू महात्मा हैं, उनका हम आदर करते हैं।



मैं बापूजी के साथ था,
हूँ और हमेशा रहूँगा

— श्री सुरेश चव्हाणके, चेयरमैन, सुदर्शन न्यूज चैनल
आजादी के बाद सबसे ज्यादा अगर किसीको सताया गया होगा तो आशारामजी बापू को सताया गया है। समाज को इस षड्यंत्र को समझना चाहिए कि धर्म के ऊपर कैसे आक्रमण किया जा रहा है। इसके सैकड़ों उदाहरण हैं। मैं बापूजी के लिए कल भी आवाज उठाता था, आज भी उठा रहा हूँ और कल भी उठाऊँगा। मैं बापूजी के साथ था, हूँ और हमेशा रहूँगा।

हम ईश्वर को माननेवाले व्यक्ति हैं और इसलिए सत्य को देखने का नजरिया ईश्वर की दृष्टि से मिलता है, उस पर ध्यान देना चाहिए ऐसा मैं मानता हूँ।

बलात्कार हुआ ही नहीं है !



— महंत यति नरसिम्हानंदजी
राष्ट्रीय संयोजक, अ.भा. संत परिषद

आज सारे १०० करोड़ हिन्दुओं को चिंतन करने की जरूरत है। संत आशारामजी बापू को एक षड्यंत्र के तहत फँसाया गया है। हिन्दू धर्म को समाप्त करने की साजिश चल रही है। आज पॉक्सो एक्ट के ऊपर बहस छिड़नी चाहिए परंतु कोई मीडिया यह कर नहीं रहा है क्योंकि देश का ज्यादातर मीडिया उन लोगों से चलाया जा रहा है जो सनातन धर्म को जड़ से समाप्त करना चाहते हैं।

मुझे विश्वास था कि बापू छूटनेवाले हैं क्योंकि बलात्कार हुआ ही नहीं है। आज अन्याय की सारी पराकाष्ठाओं को पार कर दिया गया है।



बापूजी पवित्र थे,
पवित्र हैं और पवित्र रहेंगे

— श्री डी. जी. वंजारा, पूर्व प्रमुख
ATS, गुज. एवं पूर्व आई.पी.एस. अधिकारी

आशारामजी बापू जैसे संतों को बदनाम करने की यह जो कोशिश चल रही है, वह देश व सनातन धर्म के हित में नहीं है। गत ४०-५० सालों में यदि हिन्दू धर्मावलम्बियों पर सबसे ज्यादा किसीका प्रभाव पड़ा तो आशाराम बापूजी का पड़ा है और इसकी वजह से ही उनके खिलाफ षड्यंत्र किया गया। बापूजी पवित्र थे, पवित्र हैं और पवित्र रहेंगे। मुझे यह कहते हुए गौरव होता है कि इतने कुप्रचार के बाद भी बापू के करोड़ों-करोड़ों साधकों की श्रद्धा अटूट है और वह और भी बढ़ेगी। अभी जो कुप्रचार हो रहा है उसके खिलाफ अपने-अपने ढंग से सुप्रचार चालू रखना चाहिए। कोई सूरज की ओर धूल फेंकेगा तो धूल उसीकी आँखों में गिरेगी; सूरज तो प्रकाशित था, है और रहेगा।

बापूजी को उच्च न्यायालय से न्याय मिलेगा

- श्री चेतन राजहंस, राष्ट्रीय प्रवक्ता, सनातन संस्था

इस प्रकरण में उच्च न्यायालय से पूज्य संत श्री आशारामजी बापू को न्याय मिलेगा ऐसा हमारा विश्वास है ।



बापूजी ने करोड़ों लोगों को भक्तिमार्ग पर लगाकर उनके जीवन कृतार्थ किये हैं । भारतीय संस्कृति के रक्षणार्थ वेलेंटाइन डे जैसी कुप्रथाओं का विरोध करते हुए देशभर में बड़े स्तर पर 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाना, धर्मांतरित हुए लाखों हिन्दुओं को स्वधर्म में लाना, स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग के लिए जनता में जागृति लाना, गौ-संवर्धन करना, बाल संस्कार केन्द्रों के माध्यम से भावी पीढ़ी को सुसंस्कारित करना आदि अनेक महत्कार्य बापूजी ने किये हैं । इसलिए वे हिन्दू समाज के लिए आदरणीय ही हैं ।

उनके द्वारा एक नये तरह का माहौल खड़ा किया जाता है



- अवधूत महामंडलेश्वर श्री स्वात्मबोधानंद पुरीजी निरंजनी अखाड़ा

यह अंतिम फैसला नहीं है, इसको लेकर कीचड़ उछालना यह कहाँ तक उचित है ? संत आशारामजी बापू ने अनेक अच्छे कार्य किये हैं पर समाज में कुछ ऐसे विद्वेषी लोग भी होते हैं जिन्हें अच्छे कार्यों को लेकर ईर्ष्या हो जाती है और फिर उनके द्वारा एक नये तरह का माहौल खड़ा किया जाता है ।

अंत में सत्य की ही जीत होगी

- श्री इशकरण सिंह भंडारी अधिवक्ता, सर्वोच्च न्यायालय



“संत आशारामजी बापू के विषय में आज भी मैं अपने पूर्व मत पर कायम हूँ । यह निहित स्वार्थ के लिए उनको फँसाने का मामला था । इसमें समय लग सकता है

लेकिन अंत में सत्य की ही जीत होगी । यह तो केवल पहली अदालत है ।”

श्री इशकरण सिंहजी ने पूर्व में कहा था : “एक सच्चे संत को किस प्रकार झूठे केस में फँसाकर बदनाम किया जाता है यह अगर किसीको देखना हो तो आशारामजी बापू के केस को देख ले । इससे नकली केस मैंने अपनी जिंदगी में नहीं देखा है ।”



यह फैसला दुःखद है लेकिन अंतिम नहीं

- आचार्य डॉ. राजकुमार द्विवेदी (शास्त्री)

सुप्रसिद्ध वास्तुविद् एवं ज्योतिषाचार्य

संत आशारामजी बापू के बारे में जो फैसला हुआ है, वह दुःखद है । यह अंतिम फैसला नहीं है । इसके ऊपर उच्च व सर्वोच्च न्यायालय है ।

आशारामजी बापू ने सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार में बहुत बड़ा सहयोग किया है । जो धर्म-परिवर्तन चल रहा था, लोग हिन्दू धर्म से अलग हो रहे थे, उन सभीको सनातन धर्म के प्रति निष्ठावान बनाया, समाज को एक साथ जोड़ने का काम किया । कितनी ऐसी कन्याएँ हैं, ऐसे विद्यार्थी हैं जिनको उन्होंने निःशुल्क शिक्षा दी, गरीबों में रोज भंडारे किये हैं ।

पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग

(गतांक से आगे)

अन्वेषण का गुण

पूज्य बापूजी के भानजे रमेश बताते हैं :

पूज्यश्री में बचपन से ही अन्वेषण का गुण था । वैसे सामान्य तौर पर यह गुण सभी बच्चों में होता है परंतु बालक आसुमल में विशेष रूप से था । कोई भी बात, किसी भी वस्तु के बारे में आप गहराई से सोचते, पूछते और जाँचते थे - 'क्या है ? कैसे है ? क्यों है ?...' आदि । इस गुण ने आपको 'मैं कौन हूँ ? ईश्वर कैसा है, कहाँ है ?...' - ऐसे जिज्ञासाभरे प्रश्नों को जन्म देकर परमात्म-पथ पर आगे बढ़ने में मदद की ।

गजब की याददाश्त

पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है कि "तीन साल की उम्र में ही हम पर वाणी देवी की ऐसी कृपा थी कि क्या बतायें ! एक बार चौथी कक्षा के बच्चों को शिक्षक ने एक कविता याद करने को दी थी परंतु कोई भी याद करके नहीं सुना पाया । अब सबको मार पड़नेवाली थी और उनमें हमारा भाई भी था । मैं भी उनके साथ ही बैठा था तो भाई के नाते मेरा दिल पिघला और मैंने शिक्षक से कहा : "इनको मत मारो ।"

शिक्षक ने कहा : "तो क्या तू सुना देगा ?"

मैंने पूरी कविता सुना दी तो शिक्षकसहित सभी लोग चकित रह गये । हमारी १० वर्ष की उम्र में तो ऋद्धि-सिद्धि की झलकें देखी गयी थीं ।"

बापूजी के बड़े भाई की दुकान पर एक व्यक्ति काम करता था । पूज्यश्री की पढ़ाई तीसरी कक्षा तक हुई थी और वह बी.ए. तक पढ़ा था मगर

बापूजी उसके द्वारा हिसाब में हुई भूल पकड़ लेते थे । बचपन में ही ऐसी प्रतिभा के धनी थे ।

बापूजी छोटी उम्र में ही बड़े-बड़े लोगों की समस्याओं को हँसते-खेलते सुलझा देते थे । ऐसे एक नहीं, अनेक प्रसंग हैं । ध्यान करते थे इसलिए एकाग्रता और कुशाग्र बुद्धि के धनी थे । माता-पिता व गुरु की सेवा से तथा परोपकार से बुद्धि कुशाग्र बनती है ।

तीव्र बुद्धि एकाग्र नम्रता,
त्वरित कार्य औ' सहनशीलता ॥

प्रसन्नता के धनी

बालक आसुमल से जो भी मिलता था, उनको देखकर प्रसन्न हो जाता था । बोलता कि 'यह बालक कितना हँसमुख, प्रसन्नचित्त है !' इसलिए लोग आपको हँसमुखभाई भी कहते थे ।

आज भी बापूजी कहते हैं कि "मुस्कराना मेरी आदत है, प्रसन्न रहना मेरा स्वभाव है और तुम्हें जगाना मेरा उद्देश्य है ।"

सादगीप्रियता व

परहितपरायणता

रमेशभाई बताते हैं कि बापूजी को बचपन से ही सादगी प्रिय है । सफेद वस्त्र, सात्विक भोजन पसंद है । पूज्यश्री कभी-कभी व्रत भी करते थे और उसमें केवल फल या दूध लेते थे । बचपन में भी सफेद कुर्ता-पाजामा पहनते थे ।

आज भी बापूजी को वैसा ही सादा जीवन और सादा रहन-सहन, खान-पान पसंद है । भक्तों के प्रेमवश उनके आग्रह पर थोड़ी देर के लिए रंग-बिरंगी पोशाकें, फूलहार, पगड़ी आदि पहन लेते हैं ।



विद्यार्थी संस्कार



अभावग्रस्त बालक कैसे बना विद्या का सागर ?



एक होनहार बालक था। घर में आर्थिक तंगी... पैसे-पैसे को मोहताज... न किताबें खरीद सके न विद्यालय का शिक्षण शुल्क भर सके ऐसी स्थिति ! फिर भी विद्याप्राप्ति

के प्रति उसकी अद्भुत लगन थी। पिता की विवशता को देख के उसने अपनी पढ़ाई के लिए खुद ही रास्ता निकाल लिया। आसपास के लड़कों की पुस्तकों के सहारे उसने अक्षर-ज्ञान प्राप्त कर लिया तथा एक दिन कोयले से जमीन पर लिख के पिता को दिखाया। पिता ने विद्या के प्रति बच्चे की लगन देख के तंगी का जीवन जीते हुए भी उसे गाँव की पाठशाला में भर्ती करा दिया। विद्यालय की सभी परीक्षाओं में उसने प्रथम स्थान प्राप्त किया। आगे की पढ़ाई के लिए उसने माता-पिता से आशीर्वाद माँगा तथा कहा कि "आप मुझे किसी विद्यालय में भर्ती करा दें फिर मैं आपसे किसी प्रकार का खर्च नहीं माँगूँगा।" कोलकाता के एक संस्कृत विद्यालय में उसने प्रवेश लिया और अपनी लगन व प्रतिभा से शिक्षकों को प्रसन्न कर लिया। उसका शिक्षण शुल्क माफ हो गया।

इस बालक ने केवल पेटपालू लौकिक विद्या को ही सब कुछ नहीं माना अपितु सर्वोपरि विद्या - आत्मविद्या को आदर व रुचि पूर्वक पाने हेतु प्रयास किये। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उसने इतना परिश्रम किया कि १९ वर्ष की आयु तक वह व्याकरण, स्मृति, वेद-शास्त्र तथा अन्य आध्यात्मिक ग्रंथों के ज्ञान में निपुण हो गया।

आगे चलकर यही बालक सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं विद्वान ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के नाम से सुविख्यात हुए ! ये 'यथा नाम तथा गुण' थे। आत्मनिर्भरता, परोपकारिता, परदुःखकातरता, करुणा, चन्द्रमा-सा सौम्य व शीतलताप्रद स्वभाव एवं आत्मविद्या के अध्ययन से सुशोभित उदात्त व्यक्तित्व के धनी आपने यह प्रत्यक्ष कर दिखाया कि लक्ष्य को पाने के दृढ़ निश्चय और पुरुषार्थ की कितनी भारी महिमा है !

बुद्धिमान कौन ?

बुद्धिमान वह है जो जीवन में सबसे जरूरी काम को सबसे पहले करता है। मनुष्य के जीवन में सबसे जरूरी काम है जीवन के परम लक्ष्य परमात्मा की प्राप्ति करना।

प्रेरक पंक्तियाँ

सूर्यमुखी दिन में खिलता है पर रात में नहीं।
चन्द्रमुखी रात में खिलता है पर दिन में नहीं॥
अंतर्मुखी हर क्षण खिलता ही रहता है।
उसकी प्रसन्नता किसी गैर के हाथ में नहीं॥

चार गुण बहुत दुर्लभ हैं

(१) धन में पवित्रता (२) दान में विनय
(३) वीरता में दया (४) अधिकार में निरभिमानिता

गतांक की 'ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी' के उत्तर

(१) बुद्धि (२) आसन (३) देशी गाय (४) उत्साह

गतांक की 'ज्ञानवर्धक पहेली' का उत्तर : वीर छत्रसाल

एक माँ की आध्यात्मिक यात्रा

स्वामी अखंडानंदजी सरस्वती ने अपनी माता की आध्यात्मिक यात्रा के प्रारम्भिक सोपान से पराकाष्ठा तक का सुंदर वर्णन किया है, जो बड़ा ही प्रेरणादायी है। वे लिखते हैं :

मेरी माँ का नाम था भागीरथी। मैं उन्हें 'माँ', 'मैया' आदि कहता था। मेरी ७ वर्ष की उम्र में ही मेरे पिताजी का भौतिक जीवन समाप्त हो गया था। अंतिम समय में उनके सिर से एक मांस-पिंड छलककर गंगाजी में गिर पड़ा था (ब्रह्मरंध्र से प्राण निकल गये थे)।

जब मेरी माँ रामचरितमानस का पाठ करतीं तो उनकी आँखों से झर-झर आँसू गिरते।

मेरी माँ मुझे बड़े प्रेम से भक्तों के चरित्र सुनाया करती थीं। तीर्थों से लौटने के बाद उनका मन पूजा-पाठ में बहुत लग गया। ११ वर्ष की उम्र में मैं गाँव छोड़कर पढ़ने के लिए काशी चला गया। माताजी को संसार के कार्यों में विशेष रुचि नहीं थी पर वे अपने वृद्ध ससुर की आज्ञा एवं सेवा का सम्पूर्ण ध्यान रखती थीं, आये-गये लोगों को सँभालती थीं।

पितामह की ऐसी शिक्षा थी कि घर के लोग अपने भोजन में उतना सुख नहीं मानते थे जितना दूसरों को भोजन कराने में और (कम पड़े तो) स्वयं भूखा रह जाने में भी सुख मानते थे। आनेवालों को खाटें दे दी जाती थीं और घर के लोग जमीन पर सोते थे।

जब मैं स्वामी योगानंदजी पुरी के पास जाने

लगा तब माताजी भी उनके पास आने लगीं। स्वामी योगानंदजी महाराज मंत्रजप, भगवत्पूजा, गुरुभक्ति पर बहुत बल देते थे। गंगा-स्नान के अनंतर वे घंटोंभर अपने गुरु की पूजा करते थे। वे कहते थे कि जब मैं सद्गुरुदेव की पूजा करता हूँ तो बार-बार उनके श्रीविग्रह में ब्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, शक्ति, राम, कृष्ण प्रकट होते हैं और उनमें समा जाते हैं। उनकी गुरुभक्ति देखकर लोग आश्चर्यचकित हो जाते थे। उनका वेदांत-शास्त्र का पांडित्य एवं अनुभव भी परिपूर्ण था। मेरी माँ के जीवन पर योगानंदजी का भी पूरा प्रभाव पड़ा और उनके जीवन में

भक्तिरस का उदय हुआ। वे घंटों तक भक्तिभाव में मग्न होने लगीं।

माँ को मैं अध्यात्म रामायण, विष्णु पुराण, श्रीमद्भागवत का अर्थ सुनाया करता था। वे गद्गद हुआ करती थीं।

जीवन में वेदांत का प्रवेश

मेरे संन्यास लेने के बाद माताजी अद्वैत वेदांत का विचार करने लगीं। वे खूब सत्संग-श्रवण करतीं। भगवान की भक्ति तो थी ही, मेरे संन्यासी हो जाने पर उनके मन में विशेष

वैराग्य का उदय हुआ और घर के काम में रुचि लेना कम हो गया।

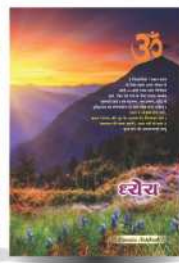
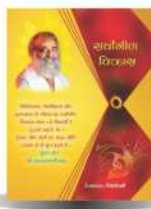
जब वे घर छोड़ के काशी में आयी थीं, उसके बाद उन्होंने घर-परिवार की चर्चा छोड़ दी थी। घर से आने के बाद उन्होंने कोई तीर्थयात्रा नहीं की। गंगा-यमुना आदि नदियों में स्नान की श्रद्धा

हे देवियो ! अपने आत्मस्वरूप को पहचानो - पूज्य बापूजी

हे देवियो ! उठो, जागो... अपने भीतर के सुषुप्त आत्मबल को जगाओ। स्त्री या पुरुष शरीर ये मान्यताएँ होती हैं, तुम तो शरीर से पार निर्मल आत्मा हो। सर्व देश (स्थान), सर्व काल में सर्वोत्तम आत्मबल को अर्जित करो। आत्मा-परमात्मा में अथाह सामर्थ्य है। संयम, साधना द्वारा अपने आत्मस्वरूप को पहचान लो तो वह दिन दूर नहीं जब विश्व तुम्हारे दिव्य चरित्र का गान कर अपने को कृतार्थ मानेगा।

नोटबुक

रजिस्टर

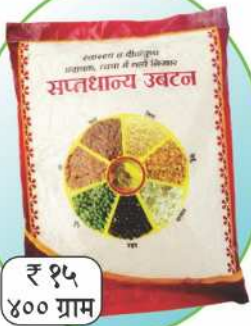


उच्च गुणवत्ता, आकर्षक डिजाइन व कम मूल्य

हर पृष्ठ पर प्रेरक सुवाक्य, जो विद्यार्थियों को ज्ञान, आत्मविवेक, सकारात्मक सोच व देशभक्ति से भर दें, सुभासकारवान बनायें।

आवरण पृष्ठों पर पायें : * एकाग्रता व स्मरणशक्ति बढ़ाने के उपाय, परीक्षा में सफल होने की युक्तियाँ, स्वास्थ्य की कुंजियाँ। * महापुरुषों के प्रेरक संदेश एवं प्रसंग व प्रेरणादायी कहानियाँ। * चित्त में प्रसन्नता, उत्साह व आनंद जगानेवाले प्राकृतिक दृश्य।... तथा और भी बहुत कुछ !

प्राप्ति-स्थान : सभी संत श्री आशारामजी आश्रम व समितियों के सेवाकेन्द्र। सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७३२



सप्तधान्य उबटन

इसके प्रयोग से पापनाशिनी ऊर्जा मिलती है। आर्थिक व बौद्धिक दरिद्रतानाशक वैदिक शास्त्र का यह दिव्य उपहार पुण्य, लक्ष्मी, स्वास्थ्य व दीर्घायुष्य प्रदायक है।

मुलतानी मिट्टी

इसका घोल रोमकूपों को खोलकर गर्मी, मल व दोषों को बाहर खींच लेता है, जिससे कई बीमारियों से रक्षा होती है तथा त्वचा स्वच्छ व मुलायम बनती है।



शीतलता-प्रदायक, स्वास्थ्यवर्धक गुणकारी शरबत व पेय

गुलाब शरबत

सुमधुर, जायकेदार, शारीरिक व मानसिक थकावट को मिटानेवाला।



₹ ७५
७०० मि.ली.

पलाश शरबत

जलन, प्यास आदि में लाभदायक, गर्मी सहने की शक्ति बढ़ानेवाला।



₹ ८०
७०० मि.ली.

ब्राह्मी शरबत

स्मरणशक्ति वर्धक, दिमाग को शांत व ठंडा रखने में सहायक।



₹ ८०
७०० मि.ली.

आँवला-अदरक पेय

भूख व बल वर्धक, रोगप्रतिरोधक क्षमता तथा नेत्रज्योति वर्धक।



₹ ४०
१ लीटर

लीची पेय

कमजोरी को दूर व शरीर को पुष्ट करने वाला तथा पाचनक्रिया को मजबूत बनानेवाला।



₹ ७०
१ लीटर

सेब पेय

उत्तम स्वास्थ्य हेतु पोषण और स्वाद से भरपूर अनोखा मिश्रण।



₹ ५०
१ लीटर

मैंगो ओज

सप्तधातु वर्धक व उत्तम हृदय-पोषक।



₹ ५५
१ लीटर

अनानास पेय

रोग-प्रतिरोधक क्षमता, पाचनशक्ति तथा नेत्रज्योति वर्धक।



₹ ७०
१ लीटर

अंगूर पेय

शीतल, बल-वीर्य, मांस व भूख वर्धक, नेत्रहितकर।



₹ ८०
१ लीटर

उपरोक्त सामग्री आप अपने नजदीकी संत श्री आशारामजी आश्रम या समिति के सेवाकेन्द्र से प्राप्त कर सकते हैं। उत्पादों के विस्तृत लाभ आदि एवं अन्य उत्पादों की जानकारी हेतु गूगल प्ले स्टोर पर सर्च करें : "Ashram store" App रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क : (०७९) ३९८७७७३० ई-मेल : contact@ashramstore.com

पूज्यश्री के अवतरण दिवस कार्यक्रमों की कुछ झलकें

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2018-20
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2020)
Licence to Post Without Pre-payment.
WPP No. 08/18-20
(Issued by CPMG UK, valid upto 31-12-2020)
Posting at Dehradun G.P.O.
between 2nd to 8th of every month.
Date of Publication: 1st May 2018



अहमदाबाद



इंदौर



ब्राम्पटन (कनाडा)



शिकागो



नवसारी (गुज.)



ग्वालियर



सागवाड़ा (राज.)



नागपुर

अनेक स्थानों में निकलीं भगवत्प्रसाद बाँटतीं भव्य संकीर्तन यात्राएँ



लुधियाना



पौंटा साहिब (हि.प्र.)



कानपुर



भुवनेश्वर



सूरत



जयपुर



जोधपुर



गाजियाबाद

गरीबों एवं आमजनों में भंडारे (भोजन-प्रसाद वितरण)



शाहजहाँपुर (उ.प्र.)



अलीराजपुर (म.प्र.)



भावनगर



अम्बाला

देशभर में सार्वजनिक स्थलों पर शरबत एवं प्रसाद वितरण



रायपुर (छ.ग.)



बेंगलुरु



हरिद्वार



वनियाम्बाडी (तमिलनाडु)

विद्यार्थी शिविरों में बल, बुद्धि और ज्ञान वर्धक युक्तियाँ सीखते बच्चे



अमरावती (महा.)



करोलबाग-दिल्ली



फरीदाबाद

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

महिला उत्थान मंडल का 'चलें स्व की ओर...' जप-अनुष्ठान शिविर साध्वी रेखा बहन द्वारा
हरिद्वार में २३ से २९ मई * अहमदाबाद में २२ (शाम) से २७ जून (दोप.) * पंजीकरण हेतु सम्पर्क
स्थान : संत श्री आशारामजी आश्रम, हरिपुर कलां * स्थान : संत श्री आशारामजी महिला उत्थान आश्रम (केवल बहनों हेतु) :
जप की विशेष तिथियों का स्वाभाविक लाभ * २३ जून : निर्जला एकादशी * २७ जून : वट पूर्णिमा (जाहिर सत्संग) ९१५७३०६३१३
९६०११४०६७४